FOR MLIS STUDENTS

Course : - Master of Library and Information Science

(MLIS)

Paper : - Paper-I

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science

School of Library and Information Sciences, Nalanda

Open University

Topic: INFORMATION: Definition, Kinds, Nature, and Use

Scanned with CamScanner

इकाई-1

सूचनाः परिभाषा, प्रकार, प्रकृति एवं उपयोग
(Information : Definition, Kinds, Nature and Use)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

1.0 उद्देश्य (Objectives)

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

1.2 सूचना की परिभाषा (Definition of Information)

1.3 सूचना के प्रकार (Types of Information)

1.4 सूचना की प्रकृति (Nature of Information)

1.5 सूचना का अनुप्रयोग (Use of Information)

1.6 सारांश (Summary-up)

1.7 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1.8 संदर्भ सूची (References)

1.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपको सूचना की परिभाषा, प्रकार, प्रकृति एवं उपयोग की जानकारी मिल सकती है ।

प्रस्तुत पाठ में हमारा उद्देश्य आज के सामाजिक एवं शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में सूचना के बारे में जानकारी अर्जित करना है। इसके लिए हम सर्वप्रथम कुछ प्रमुख विषेषज्ञों के द्वारा दी गयी सूचना की परिभाषाओं पर प्रकाश डालेंगे। तत्पश्चात सूचना के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा करेंगे। साथ ही सूचना की प्रकृति को समझने हेतु हम कुछ बिन्दुओं को प्रस्तुत करेंगे। अन्त में हम आज के सामाजिक, शैक्षणिक एवं व्यापारिक परिदृश्य में सूचना के विभिन्न उपयोगों पर प्रकाश डालेंगे।

वर्तमान परिदृश्य में सूचना का महत्व जीवन के सभी पहलुओं पर समान रूप से अपरिहार्य है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हम सूचना को न केवल सही तरह से समझने का प्रयास करें बल्कि उसके उचित एवं पर्याप्त उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए इससे जुड़े हुए समस्त तथ्यों से अवगत हों। ऐसा करने से हम सूचना के उचित प्रयोग को प्रोत्साहित कर सकेंगे।

Scanned with CamScanner

1.1 परिचय (Introduction)

एक पुस्तकालय एवं सूचना व्यवसायी अपने उपयोगकर्ता को सूचना प्रेषित करने हेतु पूर्णतः प्रतिबद्ध होता है। यह प्रतिबद्धता उसके लिए किसी भी मूल सिद्धान्त से अधिक महत्वपूर्ण है। सूचना मूलतः विभिन्न प्रकार के असंतत आकड़ों को व्यवस्थित रूप से एकजुट करने के बाद प्राप्त स्वरूप है। यह स्वरूप सामान्यतः अपने उपयोगकर्ता को एक निष्कर्ष प्रदान करता है। विभिन्न प्रकार के सूचना स्रोतों एवं उनके संग्रहों में उपलब्ध समस्त सूचनाओं की आवश्यकता सभी अथवा किसी एक उपयोगकर्ता को नहीं होती, बल्कि उपयोगकर्ता अपनी आवश्यकताओं के अनुसार इच्छित सूचना को चिन्हित करता है और फिर इन स्रोतों अथवा संग्रहों से उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। सूचना के उपयोग एवं उपयोगकर्ता की संतुष्टि दोनों के लिए यह आवश्यक है कि उपयोगकर्ता सूचना से संबन्धित विभिन्न तथ्यों को जाने, समझे एवं अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सूचना को चिन्हित कर सके।

समाज से जुड़े हुए विभिन्न क्षेत्रों में कभी न कभी एवं किसी न किसी स्वरूप में सूचना का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में मानव जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जो सूचना से अछूता हो अथवा उसे सूचना की आवश्यकता न हो। वास्तव में इन सभी क्षेत्रों की सफलता मूलतः सर्वोचित सूचना की उपलब्धता एवं प्रयोग पर निर्भर करती है। इन विभिन्न क्षेत्रों के सन्दर्भ में सूचना का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चत करने हेतु उपयोगकर्ता को इच्छित सूचना से संबन्धित विभिन्न बारीकियों को समझना अनिवार्य है। उपयोगकर्ता द्वारा संकलित की गयी सूचना भविष्य के निर्णयों का आधार प्रस्तुत करती है। अतः सूचना का गुणवत्तापूर्वक संकलन एवं प्रक्रियाकरण होने से निश्चिततौर पर परिणाम भी गुणवत्ता प्राप्त होंगे।

1.2 सूचना की परिभाषा (Definition of Information)

किसी अभिष्ट व्यक्ति के द्वारा आवश्यक संदेश को प्राप्त करना और उसको समझना ही सूचना है। यद्यपि सूचना की इस तरह की व्याख्या आसान प्रतीत होती है, फिर भी विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा सूचना की प्रकृति को समझने हेतु किये गये अध्ययन एवं शोध से यह स्पष्ट है कि हमारे समक्ष विभिन्न लोगों के कई मत उपस्थित हैं एवं सूचना की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। किसी भी शब्द की परिभाषा उसके गुणात्मक और परिमाणात्मक व्यवहार के आधार पर तय की जाती है। सूचना मानव बुद्धि का एक अदृश्य उत्पाद है, जिसे न तो देखा जा सकता है और न ही महसूस किया जा सकता है। सूचना को केवल अभिव्यक्त किया जा सकता है। विद्वानों में इसकी परिभाषा को लेकर वैचारिक मतभेद हैं। अतः इसके किसी एक पक्ष के आधार पर इसे पारिभाषित करना उचित नहीं होगा। अतः सर्वसम्मति के अभाव में वर्तमान में प्रचलित परिभाषाओं का उल्लेख करना ही उचित होगा। वर्तमान में सूचना को पारिभाषित करने हेतु विभिन्न सात आधार अथवा उपागम चिन्हित किये जा सकते हैं, जो कि निम्नलिखित हैं–

1.2.1 परिचयात्मक अथवा सांकेतिक उपागम (Communicatory or Semiotic Approach)

यह उपागम सूचना के एक स्थान से दूसरे स्थान तक संचारिक भूमिका को दर्शाता है। इसके द्वारा हमें यह पता चलता है कि किसी स्रोत से प्राप्तकर्ता तक सूचना का स्थानान्तरण होने से प्राप्तकर्ता

Scanned with CamScanner

की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस मत के प्रमुख समर्थक मैडेन, बेटसन, ब्रुकस, मैक्कल्प, नौटा और लूसी हैं।

मैडेन के अनुसार "Information is stimulus which expands or amends the world view of the information".

ब्रुक्स ने सूचना और ज्ञान के सम्बन्धों को प्रदर्शित करने के लिए एक आधारभूत समीकरण को प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार दिमाग में सूचना का प्रवेश उसके ज्ञान की संरचना को परिवर्तित कर देता है। गणितीय रूप से इसे निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है–

$$K[S] + \Delta I = K[S + \Delta S]$$

जहॉ, $K[S]$ = वर्तमान ज्ञान संरचना

$K[S + \Delta S]$ = परिवर्तित सूचना संरचना

ΔI = नया सूचना

ΔS = उपलब्ध ज्ञान में परिवर्तन का प्रभाव

फ्रिट्स मैखलप के अनुसार "सूचना संकेतों के ऐसे प्रवाह के रूप में है जिसमें उसे व्यक्त करने की प्रक्रिया समाहित है।"

योविट्स के अनुसार "सूचना निर्णय निर्धारण हेतु उपयोगी मूल्यपरक डेटा है।"

राउली के अनुसार "सूचना एक ऐसा डेटा है जो व्यक्तियों के बीच स्थानांतरित होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति उसे अपने अनुसार प्रयोग कर सकता है।"

नौटा के अनुसार "Information is the meaning that is common to all the different ways of expressing the meaning."

लूसी के अनुसार "Information is produced by all processes and it is the values in the characteristics of the process."

1.2.2 गतिविधि आधारित उपागम (Activity based Approach)

इस उपागम के प्रमुख समर्थक प्रैट हैं, जो सूचना को एक घटना के रूप में मानते हैं एवं उनके अनुसार किसी व्यक्ति विशेष हेतु उपयोगी सूचना स्थान एवं समय आधारित होती है।

1.2.3 प्रस्तावित उपागम (Propositional Approach)

इस मत के अनुसार सूचना का एक–एक भाग मिलकर सम्पूर्ण का निर्माण करता है। इसके प्रमुख समर्थक डेर, ड्रेस्टस्क और फॉक्स इत्यादि हैं। ड्रेस्टस्क सूचना स्वयं ज्ञान के उत्पादन में समर्थ है तथा क्योंकि ज्ञान को सत्य की आवश्यकता होती है, सूचना के लिये भी इसकी आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner

1.2.4 संरचनात्मक उपागम (Structural Approach)

थाम्पसन के अनुसार "सूचना एक उत्पाद है जो कि अनुभव की अपरिपक्व सामग्री के संगठन की प्रक्रिया के प्रयोग का परिणाम होता है।" उसके अनुसार विद्वानों के लिए डेटा उसी प्रकार से महत्वपूर्ण है, जिस प्रकार पेन्टर के लिए उसकी रंग पट्टिका।

1.2.5 समाजिक उपागम (Social Approach)

कोर्नेलियस के अनुसार सूचना व्यवहारिक जीवन में सामाजिक रूप से संरचनात्मक होनी चाहिएd अभ्यास एक तरह से कार्यों और विश्वासों की एक श्रंखला है, जिसका हम दूसरे लोगों के साथ पालन करते हैं और जिसका अपना आन्तरिक तर्क और नैतिकता होती है।

1.2.6 बहुप्रकारीय सूचना उपागम (Multitype Information Approach)

डर्विन के अनुसार ऐसी सूचना एक वाह्य संसार के स्वरूप में है जिसे हम प्राप्त करते हैं। वहीं वह सूचना आन्तरिक संसार के स्वरूप में है जो पहले से हमारे पास है। सही तरह से सूचना इन दोनों ही प्रकारों के मध्य सामंजस्य है। बैट्स के अनुसार सूचना किसी संगठन के विभिन्न प्रकार के पदार्थों एवं ऊर्जाओं के प्रतिरूपों का एक प्रकार है।

1.2.7 विखण्डनीय उपागम (Deconstructing Approach)

फ्रोह्मैन ने सूचना के केन्द्रीय बिन्दु को स्थानांतरित कर उसे सूचना अध्ययन एवं विज्ञान अध्ययन की ओर केन्द्रित किया। जो मुख्य रूप से प्रलेखों तक सीमित था।

1.3 सूचना के प्रकार (Types of Information)

विगत वर्षो में सूचना के क्षेत्र में आयी जागृति के कारण सूचना पर तीव्र गति से अध्ययन और शोध के कार्य सम्पादित हुए हैं। प्रगतिशील नये विचारों के कारण लोगों में सूचना के प्रति आधुनिकता की भावना आयी है। सूचना की परिभाषा को लेकर विभिन्न विद्वानों में मतभेद रहे हैं। जिसके कारण सूचना के विभिन्न प्रकारों को भी सर्वमान्य रूप से चिन्हित करना एक कठिन कार्य है।

1.3.1 जी0 भट्टाचार्या–जी0 भट्टाचार्या के अनुसार सूचना की विशेषताओं के आधार पर सूचना के दो प्रकारों का उल्लेख किया है–

- असम्बद्ध सूचना (Discursive Information)
- गैर–असम्बद्ध सूचना (Non-discursive Information)

1.3.1.1 असम्बद्ध सूचना (Discursive information)

यह एक ऐसा सन्देश है जो कि व्यवस्थित विचारों के तत्वों या इसके स्वीकृत स्थानापन्न को प्रकट करता है। इस प्रकार की सूचना के व्यवहार/अभिव्यक्ति से संबद्ध विभिन्न विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- यह एक विस्तृत क्षेत्र तक फैला हुआ है।

Scanned with CamScanner

- यह प्रसंग–दर–प्रसंग तार्किक एवं सुसंगत रूप से आगे बढ़ता है।
- यह तार्किक अमूर्तता से तार्किक व्याख्या की ओर बढ़ता है।

उदाहरण के स्वरूप में सूचना विज्ञान को पारिभाषित करते हुए पूर्ण विचारों को प्रकट करना एक असम्बद्ध सूचना है।

1.3.1.2 गैर–असम्बद्ध सूचना (Non-discursive Information)

वहीं एक व्यवस्थित विचार जब किसी व्याख्यान का आधार ले लेता है तथा ऐसी सूचना तथ्यों से परिपूर्ण एवं असम्बद्ध सूचना के किसी लक्षण के बिना प्रकट की गयी हो तो वही सूचना गैर असम्बद्ध सूचना है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से पूछता है कि तुम्हारा 'धर्म क्या है?', तो उत्तर मिलता है कि 'मैं हिन्दू या मुस्लिम हूँ' । इसमें तथ्य है तथा असम्बद्ध सूचना का कोई लक्षण नहीं है। अतः यह एक गैर असम्बद्ध सूचना है।

गैर – असम्बद्ध सूचना पुनः दो भागों में विभाजित होता है।

–गुणात्मक सूचना (Qualitative Information)

–संख्यात्मक सूचना (Quantitative Information)

1.3.2 जे0 एच0 शेरा

जे0 एच0 शेरा ने अपनी पुस्तक 'Foundation of Education for Librarianship' में सूचना को निम्नलिखित छः प्रकारों में विभाजित किया है–

1.3.2.1 वैचारिक सूचना (Conceptual Information)

वैचारिक सूचना किसी भी समस्या के समाधान के बारे में स्पष्ट विचार या सोच की मानसिक धारणा का निर्माण करती है।

1.3.2.2 अनुभविक सूचना (Empirical Information)

जो सूचना सिद्धान्तों की अपेक्षा अनुभव के द्वारा उत्पन्न या मार्गदर्शित या प्रयोग एवं अवलोकन से होती है, अनुभाविक सूचना कहलाती है। यह सूचना प्रयोग या अनुभव के द्वारा ही प्रमाणित होती है।

1.3.2.3 कार्यविधिक सूचना (Procedural Information)

कार्य करने की एक स्थापित विधि या कार्य के स्तर की प्रगति के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली सूचना कार्यविधिक सूचना के नाम से जानी जाती है।

1.3.2.4 उत्तेजक सूचना (Stimulatory Information)

एक व्यक्ति, सरकारी पार्टी, व्यवसाय इत्यादि के द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं एवं आवश्यक योग्यताओं से सम्बन्धित सूचनाऐं, जो किसी योजना या एक निश्चित कार्यविधि के लिए सहयोग प्रदान करती हैं। यह निर्णय निर्माण के लिए एक आवश्यक उपकरण है।

Scanned with CamScanner

1.3.2.5 निदेशात्मक सूचना (Directive Information)

निदेशात्मक सूचनायें वे सूचनायें हैं जो किसी सामूहिक कार्यविधि अथवा समूहिक कार्यों के दौरान उचित एवं पर्याप्त समन्वय के लिए प्रमाणिक निर्देशन हेतु सहयोग का कार्य करती हैं।

1.3.3 वाएट (Voight)–वाएट ने भी सूचना को चार प्रकारों में विभाजित किया है जो निम्नलिखित है–

1.3.3.1 वर्तमान सूचना (Current Information)

इस प्रकार की सूचना किसी कार्य की वास्तविक प्रगति या शीध्र वर्तमान के समय से जुडी होती है।

1.3.3.2 दैनित्य सूचना (Everyday Information)

इस प्रकार की सूचना रोजमर्रा की घटनाओं को शामिल करती है।

1.3.3.3 जिज्ञासु सूचना (Catching up Information)

इस प्रकार की सूचना को बुद्धि के साथ समझना पडता है। इसमें सूचना को व्याग्रता से धारण कर स्वंय को आधुनिक होने की प्रवषत्ति होती है।

1.3.3.4 सुविस्तृत सूचना (Exhaustive Information)

यह किसी विषय या बिन्दु पर विस्तष्त या व्यापक सूचना उपलब्ध कराती है।

1.4 सूचना की प्रकृति (Nature of Information)

सूचना के यथोचित उपयोग हेतु एक उपयोगकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह सूचना की प्रकृति को समझे एवं आवश्कता पड़ने पर इच्छित सूचना को आसानी से समझ सके। सूचना की प्रकृति से सम्बद्ध विभिन्न तथ्य निम्नलिखित हैं–

- सूचना परिस्थिति के अनुसार छोटे छोटे टुकडों में बदल जाती है। अर्थात् सूचना परिस्थितिजन्य होती है।
- सूचना किसी संगठन के नियम निर्धारण में आवश्यक होती है।
- सूचना का आदान–प्रदान, विस्तार और संक्षिप्त किया जा सकता है।
- सूचना सामयिक और क्षणिक होती है।
- सूचना को परिमाणात्मक रुप से प्रदर्शित नहीं किया जा सकता।
- सूचना को प्रदर्शित करने कि लिए संरचना या परिदृश्य की आवश्यकता होती है।
- सूचना की महत्ता एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के लिए भिन्न होती है।
- सूचना एक लोकतांत्रिक स्रोत है।
- सूचना ज्ञान का एक भाग है।

Scanned with CamScanner

- सूचना के मापन के लिए विशेष मापक की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार कि साहित्यिक चोरी को रोकने के लिए कापीराइट या आर पी आर।
- सूचना समय के साथ परिवर्तित होती रहती है।
- सूचना सार्वभौमिक है।
- सूचना का उपयोग अन्तर्विषयक होता है।
- सूचना विजातीय (heterogeneous) है।

राथसाल के अनुसार सूचना की प्रकृति को उसके चार घटक बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है–

–पदार्थ (Commodity)

यह ज्ञान और सम्प्रेषण के अनुभव, जन्म, विषय वस्तु आदि को प्रदर्शित करता है। उदाहरण स्वरुप– कुछ कार्यक्रम एवं कुछ सांसारिक कथन आदि ।

–प्रक्रम (Process)

यह ज्ञान और सम्प्रेषण के मूल तथा संरचनात्मक पक्ष की ओर संकेत करता है। सूचना किसी कथन को प्रस्तुत करने का ही एक प्रक्रम है। उदाहरण स्वरुप जातिगत संरचना।

–जानकार होने का कथन (Statement of Knowing)

इस तरह की सूचना किसी भी व्यक्ति के अपने से सम्बद्ध समस्त जानकारी होने की स्थिति को स्पष्ट करती है।

–वातावरण या परिस्थितिकी (Environment)

वातावरण से अभिप्राय तंत्र के अन्तर्गत मानव–मशीन एवं मानव–मानव तंत्र आदि के निर्देशन एवं नियंत्रण से है। जिसमें डाटा–सूचना का स्थानान्तरण होता है।

1.5 सूचना का अनुप्रयोग (Use of Information)

वर्तमान में मानव जीवन का ऐसा कोई भी पक्ष नहीं है जिसे सूचना के बिना नियंत्रित एवं सम्पादित किया जा सके। समाज में किसी भी कार्य अथवा क्रिया को पूर्ण करने में सूचना एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उपयोग में लायी जाती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सूचना के बिना किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पादित नहीं किया जा सकता। सूचना के उपयोग के कुछ प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं–

1. विज्ञान एवं तकनीकी में उपकरण के रुप में।
2. व्यवसायिक लेन–देन के नियम निर्धारण में।
3. सामाजिक विकास में।
4. विपणन के प्रचार में ।

Scanned with CamScanner